ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292RNI
REG. NO. UPBIL/2014/66218 **PP. No.- 160-163**

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-18, No.-IV, Issues-34, YEAR-Oct-Dec. 2024

महात्मा गाँधी का सत्याग्रह

किरण कुमारी

शोध अध्येत्री–राजनीति विज्ञान विभाग, मगध विश्वविद्यालय, बोध गया (बिहार) भारत

Received-05.11.2024, Revised-11.11.2024, Accepted-16.11.2024 **E-mail :akbar786ali888@gmail.com**

सारांशः ***गाँधी का सत्याग्रह से तात्पर्य अहिंसा में आस्था रखने वाले मनुष्य का 'सत्य के प्रति आग्रह है।' इस सिद्धान्त के अन्तर्गत अहिंसा के साथ ही साथ सत्य का समावेश हो जाने पर एक नवीन परिस्थिति उत्पन्न हो जाती है। सत्याग्रह में सभी बातें सत्य के संदर्भ में ही कही जाती हैं, जिससे दूसरों को थोड़ा सा भी कष्ट न हो, यही सत्याग्रह आदर्श है। सत्याग्रह सत्य की निरापद खोज है। इसके लिए व्यक्ति जीवन पर्यन्त प्रयास करता हुआ संघर्षरत रहता है। सत्याग्रह में स्वयं ही सब कुछ सहन किया जाता है, इसलिए इसमें बैर भावना का जन्म किसी भी रूप में नहीं हो पाता है। गाँधी के अनुसार 'सत्याग्रह का अर्थ विरोधी को कष्ट नहीं वरन् स्वयं कष्ट उठा कर सत्य की रक्षा करना है"। उन्होंने सत्याग्रह को कार्य की सीधी पद्धति के रूप में देखा है। डॉ० सीतारमैया ने सत्याग्रह के रचनात्मक पक्ष पर बल देते हुए कहा है कि सत्याग्रह एक विधेयात्मक एवं अप्रतिहत शक्ति के रूप में कार्य करता है, जिसका प्रभाव अनुभव सिद्ध है। स्पष्ट है कि यहाँ पर सत्याग्रह का विध्यात्मक स्वरूप सत्य अहिंसा के ही कारण संभव होता है।***

कुंजीभूत शब्द– सत्याग्रह, अहिंसा, सत्य, आग्रह, आदर्श, निरापद, जीवन पर्यन्त, संघर्षरत, बैर भावना, सीधी पद्धति

'सत्याग्रह' 'सत्य' और 'आग्रह' से निर्मित एक शब्द है जिसका अर्थ है– 'सत्य का आग्रह'। किन्तु भिन्न–भिन्न व्यक्ति सत्य के भिन्न–भिन्न अर्थों का प्रतिपादन करते हैं इसलिए सत्याग्रह के अर्थ में भी विभिन्नता आ गयी है। जयन्तुजा बन्दोपाध्याय ने गाँधी के सत्य के मूल्यात्मक अर्थ पर विशेष जोर दिया है। उनके अनुसार अपने मूल्यात्मक अर्थ में सत्य न्याय का द्योतक है।[4] इसलिए सत्याग्रह का अर्थ हुआ– न्याय का आग्रह। 'डॉ० सुगदास गुप्ता ने सत्य को मौलिक धारणा मानकर इसे सामाजिक व्युत्पन्न वस्तु माना है'।[5] उन्होंने कहा है कि मौलिक धारणा अहिंसा है जिसका मुख्य अर्थ है 'अवशोषण'। अतः सत्याग्रह सामाजिक सत्य के रूप में अशोषण के रूप में अहिंसक प्रक्रिया है।[6] किन्तु ये दोनों सत्य एकांकी हैं, अतः गाँधी ने सत्याग्रह को सत्य–शक्ति7 के रूप में स्वीकार किया था तथा सत्य का अर्थ आत्मा माना था।[8] गाँधी के अनुसार सत्याग्रह का अर्थ है– आत्मशक्ति[9], प्रेमशक्ति[10] तथा सत्यशक्ति का आग्रह । सत्याग्रह वह प्रक्रिया है जो आत्मशक्ति तथा प्रेम–शक्ति के विकास के लिए आवश्यक है। यही कारण है कि सत्याग्रही को न्याय तथा अशोषण के प्रति आग्रह करना पड़ता है किन्तु अन्ततः न्याय और अशोषण आत्म–शक्ति में विलीन हो जाते हैं क्योंकि इनकी अपनी सत्ता नहीं होती है। आत्म–शक्ति तथा प्रेमशक्ति स्वतः पूर्ण अर्थ रखते हैं। ये स्वतः साध्य हैं। अतः सत्याग्रह का अर्थ आत्मशक्ति तथा प्रेमशक्ति के प्रति आग्रह रखना है।सत्य अहिंसा पर निष्ठा रखते हुए ह्रदय के निर्देशानुसार आचरण करने से सत्याग्रह रूपी अस्त्र की धीरे–धीरे तैयारी हो जाती है।[11] सत्याग्रह का यह विचार गाँधी के हाथों में आकर प्रेम का विधान बन गया।

सत्याग्रह एक प्रेम का विधान तथा सभी मनुष्यों के लिए प्रेम का मार्ग है। इसमें सभी परिस्थितियों तथा रूपों में सिद्धान्ततः हिंसा का पूर्णतया परित्याग करना होता है।[12] यद्यपि सत्याग्रह तथा दुराग्रह एक दूसरे के विपरीत हैं तथापि सत्याग्रह के अर्थ को और अधिक स्पष्ट करने के लिए सत्याग्रह तथा दुराग्रह में अन्तर करना आवश्यक है। दुराग्रह एक ऐसी धारणा है जिसमें एक प्रकार का दबाव होता है। दुराग्रही अपने स्वार्थ विचार तथा आत्मा को विशेष महत्व देता है और दबाव के बल पर अपने पक्ष का समर्थन चाहता है जिसमें हिंसक होने की संभावना बढ़ जाती है। वह अहिंसा पर ध्यान नहीं देता, क्योंकि वह तो अपने स्वार्थ में अन्धा होता है वह श्आप भला तो जग भला के सिद्धान्त में विश्वास करता है और उसकी पूर्ति के लिए किसी प्रकार के साधन को अपनाने में थोड़ा भी संकोच नहीं करता है, उसकी दृष्टि इतनी बढ़ जाती है कि अन्य व्यक्ति या समूह की उसे कभी भी चिन्ता नहीं रहती है किन्तु सत्याग्रही इस तथ्य से परिचित रहता है। मानव द्वारा प्राप्त ज्ञान 'सापेक्ष सत्य' का ज्ञान है अर्थात जो ज्ञान एक व्यक्ति के लिए सत्य है वह दूसरे के लिए असत्य हो सकता है। यही कारण है कि सत्याग्रही अपने विचारों को दूसरों पर बलपूर्वक थोपने का कभी प्रयास नहीं करता।[13] सत्याग्रही का लक्ष्य सुलह और समझौता है न कि दबाव[14] इसलिए सत्याग्रह का आचरण करने वाला व्यक्ति अपने प्रतिद्वन्दी को कभी भी नीचा दिखाने का प्रयास नहीं करता है। सत्याग्रही सभी प्रकार की हिंसा तथा दबाव से मुक्त होता है।

सामान्यतया विभिन्न परिस्थितियों में सत्याग्रह के विभिन्न रूप हो सकते हैं जैसे निष्क्रिय प्रतिरोध, सविनय अवज्ञा, असहयोग, हड़ताल, अनशन, उपवास आदि। गाँधी और उनके अनुयायियों ने विभिन्न परिस्थितियों में अन्याय के प्रतिकार के लिए प्रायः इन विधियों का प्रयोग किया। ये विधियां सत्याग्रह में अन्तर्मूर्ति हो जाती हैं। सत्याग्रह की अवधारणा के विकास क्रम को देखने से ऐसा प्रतीत होता है कि सत्याग्रह इन सभी के उपादेय पक्ष को अपने अर्थ में समाविष्ट तो करता है किन्तु उनकी सीमाओं है में बंधता नहीं है। अतः सत्याग्रह से इनका अन्तर करना आवश्यक है। अपने प्रारम्भिक आंदोलनों में गाँधी सत्याग्रह तथा निष्क्रिय प्रतिरोध में बहुत अधिक भिन्नता नहीं मानते थे। इसलिए यह भ्रान्ति होना स्वाभाविक ही है कि सत्यागह तथा निष्क्रिय प्रतिरोध समानार्थक हैं किन्तु बाद के उनके विचारों से स्पष्ट हो जाता है कि सत्याग्रह को निष्क्रिय प्रतिरोध मानना उचित नहीं है। यद्यपि सत्याग्रह तथा निष्क्रिय प्रतिरोध दोनों आक्रमण का सामना करने, झगड़ों को निपटाने तथा सामाजिक और राजनीतिक परिवर्तन की पद्धतियाँ हैं, तथापि इन दोनों में मौलिक अन्तर है। निष्क्रिय प्रतिरोध दुर्बल का अस्त्र है और इसका आधार है– आत्मशक्ति की श्रेष्ठता। इसके साथ ही साथ सत्याग्रह ऐसे वीरों का अस्त्र है जिनमें बिना मारे ही मरने का साहस है। सत्याग्रह हिंसा को कभी भी स्वीकार नहीं करता वरन् उसे स्थान पर प्रेम और त्याग को महत्व देता है क्योंकि वह सत्य पर बल देता है।

अनुरूपी लेखक/ संयुक्त लेखक

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-18, No.-IV, Issues-34, YEAR-Oct-Dec. 2024

गाँधी का सविनय अवज्ञा सभी प्रकार के अनैतिक कानूनों का अहिंसात्मक तरीके से प्रतिरोध करता है। यह सत्याग्रह का एक अंग है।15 अतएव इसे पूर्ण सत्याग्रह नहीं कहा जा सकता है। असहयोग भी सत्याग्रह की एक शाखा का नाम है।[16] जिसमें किसी राज्य के सभी नागरिक भाग ले सकते हैं तथा राज्य के शोषण से अपना असहयोग कर सकते हैं। इसी प्रकार हड़ताल, अनशन और उपवास को भी गाँधी ने सत्याग्रह के अंग के रूप में स्वीकार किया है।[17]

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि सत्याग्रह केवल सामूहिक संघर्ष तथा प्रतिकार की ही पद्धति नहीं है, वरन् यह व्यक्तिगत तथा घरेलू संघर्ष का भी समाधान प्रस्तुत करता है। यह सत्याग्रह केवल संघर्ष उत्पन्न कराने वाला ही नहीं, वरन् रचनात्मक कार्यों की भी पृष्ठभूमि तैयार करता है तथा मूल्यात्मक अर्थ का पोषक है। इस प्रकार सत्याग्रह एक अन्वेषणात्मक प्रक्रिया है, जिसमें आत्मशक्ति तथा प्रेमशक्ति का अन्वेषण होता है। इसकी प्रत्येक प्रक्रिया चाहे वह आन्दोलनात्मक हो, भावात्मक हो या मूल्यात्मक, इसका सम्बन्ध किसी न किसी रूप में आत्म–शक्ति तथा प्रेमशक्ति के विकास से ही रहता है। सत्याग्रही रूपी अस्त्र का प्रयोग करके गाँधी ने अपने जीवन में उस वस्तु की प्राप्ति कर ली जो कि आज के परिप्रेक्ष्य में संदेहास्पद लगता है।

सत्याग्रह की आधारभूत मान्यताएँ: गाँधी का विचार था कि सत्याग्रह के प्रयोग के पूर्व कुछ मान्यताओं का पालन करना आवश्यक है, क्योंकि ये मान्यताएँ ही सत्याग्रह की पृष्ठभूमि तैयार करती हैं। इन मान्यताओं को तीन श्रेणियों में विभक्त किया जा सकता है–

तत्त्वमीमांसीय मान्यता: गाँधी का मत था कि इस मान्यता के अनुसार प्रत्येक सत्याग्रही को ईश्वर में अटूट विश्वास रखना पड़ता है अर्थात् ईश्वर के नाम पर अपने समस्त सिद्धान्तों की पुष्टि करने को उसे तैयार रहना पड़ता है।[18] किन्तु सत्याग्रही का कोई विशेष ईश्वर नहीं होता। सत्याग्रह के लिए केवल इतना ही पर्याप्त है कि वह अपने धर्म के अनुसार ईश्वर की सत्ता में विश्वास रखे। इसका कारण यह है कि ऐसे संकट सत्याग्रही के सामने आ सकते हैं कि जब ईश्वर की सत्ता में विश्वास किये बिना किसी प्रकार के प्रतिकार तथा आवाज को सहन करना उसके लिए असंभव हो। ईश्वर की सत्ता में विश्वास करने पर ही इन संकटों को सहन करने की अद्वितीय शक्ति भी सत्याग्रही में आ जाती है।

गाँधी ने सत्याग्रह की दृष्टि से ही ईश्वर की इतनी विशद और व्यापक व्याख्या प्रस्तुत की थी जिसमें स्वीकार करने तथा स्वीकार न करने वालों दोनों के लिए सत्याग्रह पालन करने के पर्याप्त अवसर थे क्योंकि दोनों मानवता में दृढ़ विश्वास करते हैं और मानवता में विश्वास करने वाला सत्याग्रही हो सकता है। सिद्धान्ततः कोई व्यक्ति धार्मिक दृष्टिकोण को स्वीकार करता है या नहीं किन्तु यह अवश्य सत्य है कि सत्याग्रह की भावना का प्रादुर्भाव मानव स्वभाव में तभी होता है जब उसमें धार्मिक भावना रूपी ऐसी गहरी आस्था जन्म लेती है जहाँ पर सन्त और शहीद का व्यक्तित्व जो एक दूसरे के लिए तथा सत्य के लिए अपने बलिदान करने के लिए हमेशा तत्पर रहता है और धार्मिक व्यक्ति को उस तत्व का साक्षात्कार ईश्वर के रूप में होता है।[19] गहरी आस्था के अभाव में सत्याग्रही अपने जीवन में उन्नति नहीं कर सकता है। जिस प्रकार संत और शहीद को अपने कार्यों में पूर्ण आस्था रहती है, उसके लिए वे अपने प्राणों की आहुति देने को भी सदैव तत्पर रहते हैं, ठीक उसी प्रकार की आस्था सत्याग्रही के लिए भी आवश्यक है।

मनोवैज्ञानिक मान्यता: सत्याग्रह की मनोवैज्ञानिक मान्यता के अनुसार सत्याग्रही मानसिक रूप से लोभ, घृणा, स्वार्थ, क्रोध आदि के स्थान पर त्याग, प्रेम, सहयोग, हर्ष आदि के द्वारा व्यक्तियों के ह्रदय को परिवर्तित करने का प्रयास करता है। इसके लिए सत्याग्रही द्वारा निम्नलिखित नियमों का पालन करना आवश्यक है।

1. सत्याग्रही को सहिष्णु होना आवश्यक है। उसमें अपने प्रतिद्वन्दी के क्रोध तथा प्रहार को सहन करने की शक्ति होनी चाहिये। यदि वह प्रतिकार करता हो तो उसे अहिंसक अस्त्र का प्रयोग करना चाहिए।

2. सत्याग्रही को क्रोध का परित्याग और अक्रोध का पालन करना चाहिए क्योंकि क्रोधी व्यक्ति से सत्याग्रह का पालन करने की अपेक्षा नहीं की जाती है। क्रोध तो व्यक्ति का ऐसा शत्रु है, जो उससे किसी भी प्रकार का अनैतिक कार्य करवा सकता है। इसलिए क्रोध का परित्याग करना प्रत्येक सत्याग्रही का कर्तव्य होता है।

3. राजनीतिक सत्याग्रही को अगर शासन की ओर से बन्दी बनाने का आदेश आता है तो उसे स्वेच्छा से बन्दी हो जाने के लिए तैयार हो जाना चाहिए और अपनी संपत्ति इत्यादि के अपहरण में भी किसी प्रकार का प्रतिरोध नहीं करना चाहिए। उसे नियमों का विनम्रतापूर्वक पालन करना चाहिए।

4. सत्याग्रही को अपने अपमान की चिन्ता न करते हुए प्रतिपक्षी को अपमानित नहीं करना चाहिए। यदि कोई हुए व्यक्ति प्रतिपक्षी को अपमानित अथवा उस पर प्रहार करता है तो सत्याग्रही का कर्तव्य है कि उसकी सुरक्षा में अपनी जान की बाजी तक लगा दे।

5. सत्याग्रही को सत्याग्रह के नेता के आदेश का पालन करने में तनिक भी संकोच नहीं करना चाहिए।

6. सत्याग्रही को जाति, धर्म, लिंग आदि के भेद–भाव से ऊपर उठकर कार्य करना चाहिए तथा किसी साम्प्रदायिक दंगे का कारण भी नहीं होना चाहिए ।

7. सत्याग्रही को स्वार्थ से दूर रहना चाहिए तथा अपने आश्रितों के लिए भत्ते की मांग भी नहीं करनी चाहिए।

नीतिशास्त्रीय मान्यता– गाँधी जी ने सत्याग्रह का प्रयोग एक नैतिक विकल्प के रूप में किया था। अतः सत्याग्रही के लिए आवश्यक हो जाता है कि वह उच्च कोटि की नैतिकता का पालन करे। प्राचीन काल से लेकर आज तक जो युद्धों की परम्परा चली आ रही है उनका कारण स्वार्थ, साम्राज्यवाद एवं प्रभुता की भावना आदि हैं। प्रायः देखा गया है कि एक युद्ध दूसरे युद्ध की पृष्ठभूमि तैयार करता है। इन युद्धों के परिणामस्वरूप कितने ही व्यक्तियों को मौत की गोद में जाना पड़ता है, तथा धन की भी क्षति हुई है,

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-18, No.-IV, Issues-34, YEAR-Oct-Dec. 2024

किन्तु इन युद्धों ने किसी भी समस्या का अंतिम समाधान प्रस्तुत नहीं किया। वे तो केवल क्रोध, घृणा आदि को विकसित करते हैं। इन युद्धों से मानव की मानवता एवं नैतिकता भी समाप्त हो गयी है किन्तु सत्याग्रह एक ऐसा अस्त्र है जिससे मानवता की रक्षा की जा सकती है। नैतिक दृष्टि से विचार करने पर सत्य–अहिंसा ही इसके मुख्य अस्त्र हैं। यही कारण है कि गाँधी ने एकादश व्रत का पालन सत्याग्रह के लिए आवश्यक बताया है। इन एकादश व्रतों के पालन से सत्याग्रह में उच्च नैतिक भावना विकसित होती है।

उपर्युक्त मान्यताओं को ध्यान में रखते हुए कहा जा सकता है कि सत्याग्रही को सत्य–अहिंसा का पालन 'धर्म' के रूप में मानकर स्वीकार करना होता है। सत्याग्रह में सम्पूर्ण मानव समाज को उत्तम एवं व्यावहारिक मानना पड़ता है। सत्याग्रही को अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए अपने प्राण तथा संपत्ति को छोड़ने के लिए सदैव तैयार रहना पड़ता है। इसके साथ ही साथ सत्याग्रही को यह ध्यान भी देना पड़ता है कि वह अपने को समाज का एक आदर्श व्यक्ति तथा सच्चा सेवक होने का वादा कर सके।

अतएव गाँधी ने सत्याग्रही के लिए न केवल एकादश व्रतों के पालन पर ही जोर दिया अपितु रचनात्मक कार्यों में भाग लेने का आदेश भी दिया है। सत्याग्रही का जीवन पूर्णतया अनुशासित होता है ताकि वह दूसरों के लिए भी आदर्श बन सके। अतएव समय–समय पर दिये गये आदेशों का पालन उसे ह्रदय से करना होता है।[20] गाँधी का विचार था कि ईमानदारी तथा मनसा, वाचा, कर्मणा, निर्वरता के अभाव में सत्याग्रह की कल्पना असंभव है।[21] अतः उनके अनुसार सत्याग्रही केवल वे ही नहीं हैं जो अहिंसा की सभी गुत्थियों का पालन करते हैं वरन् भी सत्याग्रही ही हैं जो कि अहिंसा की सभी गुत्थियों को स्वीकार करते हैं तथा उनका पालन करने लिए क्रमानुसार प्रयत्न करते रहते हैं।[22]

सत्याग्रह की प्रक्रियाः सत्याग्रह की प्रक्रिया के तीन सोपान है– प्रथम– आंदोलनात्मक तथा संघर्षात्मक प्रक्रिया है, जिसके द्वारा सत्याग्रही अन्याय का प्रतिकार अहिंसक ढंग से करता है। इस प्रक्रिया को आर0आर0 दिवाकर ने ष्एग्रेसिव सत्याग्रह ष्23 कहा है। दूसरी प्रक्रिया का नाम है– भावात्मक प्रक्रिया जिसमें समाज की सेवा का रचनात्मक कार्य होता है। इसे श्री दिवाकर ने 'कान्सट्रक्टिव सत्याग्रह[24] की संज्ञा दी है। तथा तीसरी प्रक्रिया– मूल्य परिवर्तनात्मक है जिसमें सत्याग्रही और समाज का मूल्य परिवर्तन होता रहता है। गाँधी दर्शन में सत्याग्रह की इन तीनों प्रक्रियाओं का विशद् विवेचन मिलता है।

आंदोलनात्मक तथा संघर्षात्मक प्रक्रियाः आन्दोलन या संघर्ष को सत्याग्रह की प्राथमिक तथा महत्वपूर्ण प्रक्रिया के रूप में जाना जाता है। सत्याग्रह की प्रक्रिया समाज की प्रचलित बुराईयों से संघर्ष करने के लिए आरम्भ की जाती है। इन बुराईयों में सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक आदि में से कोई भी बुराई हो सकती है। इस संघर्ष में व्यक्ति, समाज या राष्ट्र तथा अन्तर्राष्ट्र में से कोई भी भाग ले सकता है।[25] अतः सत्याग्रह यहाँ पर एक अहिंसात्मक प्रक्रिया के रूप में सामने आता है। इस आंदोलन के अन्तर्गत सत्याग्रह के लिए कई प्रकार के अहिंसक कार्य करने पड़ सकते हैं, जिन्हें भिन्न–भिन्न विचारकों ने सत्याग्रह के सोपान[26] सत्याग्रह के प्रकार[27] सत्याग्रह की शाखा[28] आदि नामों से वर्णित किया है। सत्याग्रह के संदर्भ में यह भी प्रश्न विचारणीय लगता है कि सत्याग्रह कौन करता है? किस प्रकार करता है? आदि। उक्त प्रश्नों के उत्तर में सत्याग्रह के अनेक सोपानों की चर्चा मिलती है अतएव इसे दो वर्गों में बांटा जा सकता है। प्रथम वर्ग में सत्याग्रही मनुष्यों के विभिन्न वर्गों तथा द्वितीय वर्ग में सत्याग्रह विधि के विभिन्न सोपानों का निरूपण किया गया है।

संघर्ष विधिः सत्याग्रह में संघर्षकर्ता की तरह संघर्ष विधि की भी महत्वपूर्ण भूमिका है। यह प्रश्न उठना स्वाभाविक ही है कि सत्याग्रह में संघर्ष की विधि कैसी होगी? संघर्ष की विधि के दो प्रमुख अंग है – व्यक्तिगत तैयारी तथा प्रतिरोध व्यक्तिगत तैयारी तीन भागों– उपवास, हिंसा का प्रतिकार, तथा आत्मपीड़न में विभक्त है और प्रतिरोध का कार्यान्वयन हैः असहयोग। सत्याग्रही को इसके विभिन्न सोपानों का आचरण करना होता है।

व्यक्तिगत तैयारी.–उपवासः उपवास को भारतीय परम्परा में व्रत के रूप में प्राचीन काल से ही स्वीकार किया जाता है। उपवास एक ऐसी प्रक्रिया है, जो कि अतीत काल से ही ह्रदय परिवर्तन का साधन रहा है। उपवास मनुष्य की प्रार्थना को जीवित बनाता है तथा आत्मा को ईश्वरोन्मुख बनाकर शान्ति प्रदान करता है।[29] भारतीय परम्परा में उपवास को सर्वश्रेष्ठ प्रार्थना के रूप में स्वीकार किया जाता है। इस परम्परा की यह मान्यता है कि उपवास के बिना प्रार्थना संभव नहीं हो सकती है तथा ऐसा उपवास जो प्रार्थना का अंग नहीं है केवल शरीर की यातना ही है। भारतीय परम्परा में उपवास को तपस्या और आध्यात्मिक प्रयास के रूप में जाना जाता है किन्तु इस धार्मिक उपवास और सत्याग्रह के लिए किये गये उपवास में पर्याप्त अन्तर है। व्रत या धार्मिक उपवास व्यक्ति द्वारा इस आस्था से किया जाता है कि इससे पुण्य की प्राप्ति होगी जिसका लाभ उसे इस जन्म या भविष्य के जन्म में प्राप्त होगा किन्तु सत्याग्रह के लिए किया गया उपवास अन्यायी को अन्याय की अनुभूति कराना तथा उसके ह्रदय में परिवर्तन लाना है। इस प्रयोग का परीक्षण संभव हो जाये यह ही सत्याग्रह की वैज्ञानिकता है। गाँधी जी को पूर्ण विश्वास था कि उन्होंने सत्याग्रह को वैज्ञानिक स्तर पर प्रतिष्ठित किया है।[30] उपवास में सत्याग्रही स्वयं अहिंसात्मक मार्ग का वरण करके अपने शरीर को कष्ट देता है। यह उपवास भी दो प्रकार के उद्देश्यों के लिये किये जा सकते हैं– दुराग्रह तथा सत्याग्रह। दुराग्रह मूलक उपवास में उपवास करने वाला व्यक्ति अन्यायी को सुधारने की दृष्टि से उपवास नहीं करता अपितु अपनी बातों को स्वीकार कराने के लिए यह धमकी देता है कि यदि मेरी बात नहीं सुनेंगे तो हम भूखों मर जायेंगे । सत्याग्रह मूलक उपवास में सद्भावना पूर्वक अन्यायी का ह्रदय परिवर्तन किया जाता है।

गाँधी जी की दृष्टि में उपवास अन्याय का विरोध तथा अन्यायी के ह्रदय को परिवर्तन करने का साधन है किन्तु सत्याग्रही अस्त्र के प्रयोग के लिए गंभीर रहना अति आवश्यक है। इस अस्त्र का प्रयोग विशेष अवसरों पर उपवास कला में दक्ष व्यक्तियों या किसी विशेषज्ञ के निरीक्षण में ही हो सकता है।[31]

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-18, No.-IV, Issues-34, YEAR-Oct-Dec. 2024

इस प्रकार संघर्ष कर्ताओं तथा आंदोलनकारी द्वारा संघर्षात्मक प्रक्रिया को कार्य रूप में परिणत करने, समाज के दोषों के निवारण के लिए किया गया अहिंसात्मक कार्य ही सत्याग्रह है। प्रेम, अहिंसा, अभय, स्वतंत्रता, आदि की स्थिति में सत्याग्रह की कोई आवश्यकता नहीं होती है। किन्तु इसके विपरीत जहाँ पर अत्याचार, हिंसा, भय, परतंत्रता आदि होते हैं वहाँ पर व्यक्ति, समूह, राष्ट्र, अन्तर्राष्ट्र को सत्याग्रह का वरण करना पड़ता है। यह सत्याग्रह व्यक्ति का समूह के साथ हो सकता है या समूह का व्यक्ति या राज्य के साथ हो सकता है। अपने जीवन में गाँधी जी ने विभिन्न प्रयोगों द्वारा इस बात की पुष्टि की थी। गाँधी जी ने सत्याग्रह का राजनीति में प्रयोग करके इतिहास की उन घटनाओं की पुनरावृत्ति नहीं होने दी जिनमें राजा द्वारा अत्याचार होने पर प्रजा उसे शान्तचित्त से सहन कर लेती थी, किन्तु यदि एक राज्य दूसरे राज्य पर अत्याचार करता था तो युद्ध होना अवश्यम्भावी हो जाता था। गाँधी जी की यह महान देन है कि उन्होंने विश्व व्यापक युद्ध परम्परा को सत्याग्रह के नैतिक मार्ग की ओर उन्मुख कर दिया। सत्याग्रह में व्यक्ति या समूह की चेतना की स्वतंत्रता तथा हित व्यक्ति, समुदाय, समाज और राष्ट्र के द्वारा सत्याग्रह करने पर सुरक्षित रहता है। कोई भी व्यक्ति नैतिकता, अनुशासन तथा अहिंसा के आधार पर सत्याग्रह का वरण कर सकता है। इस प्रकार गाँधी ने सत्याग्रह को व्यक्तिगत ही नहीं वरन् अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी प्रतिष्ठित करके समाज को एक नई दिशा प्रदान की।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. यंग इण्डिया, 14–1–1920, पृ0 102.
2. वही, 20–10–1927, पृ० 104.
3. गाँधी और गाँधीवाद, पृ0 70.
4. सोशल एण्ड पोलिटिकल थॉट ऑफ गाँधी, पृ0 29.
5. गांधियन कान्स्ट्रक्ट फार ए न्यू सोसाइटी, पृ० 333, 340–341.
6. द हार्डकोर ऑफ गाँधीज सोशल एण्ड इकोनॉमिक थॉट, पृ0 704
7. सत्याग्रह, पृ० 3.
8. वही।
9. वही।
10. वही।
11. सत्याग्रह विचार युद्धनीति, पृ0 56.
12. सत्याग्रह और विश्व शांति, पृ० 16.
13. यंग इण्डिया 1–5–1924, पृ0 49.
14. हरिजन, 23–3–1940, पृ0 53.
15. सत्याग्रह, पू0 4.
16. वही।
17. वही, पृ0 5–8.
18. सत्याग्रह, पृ० 364.
19. गाँधीमार्ग– 12, 4–10–1968, पृ0 347–48.
20. सत्याग्रह, पृ0 88, हरिजन, 25–3–1939, पृ0 88.
21. हरिजन, 22–10–1939, पृ0 298.
22. स्टडीज इन गाँधीजन, पृ० 125.
23. सत्याग्रह, पृ० 47.
24. वही।
25. वही।
26. कान्कवेस्ट ऑफ वायलेंस द गांधियन फिलासफी ऑफ कान्फिलंक्ट, पृ० 40–41.
27. सोशल एण्ड पोलिटिकल थॉट ऑफ गाँधी, पृ० 227.
28. सोशल फिलासफी ऑफ महात्मा गाँधी, पृ0 162.
29. सर्वोदय तत्व दर्शन, पृ० 131.
30. सर्वोदय क्रान्ति की तकनीक के परिप्रेक्ष्य में गाँधी का सत्याग्रह।
31. वही, पृ0 1019.

*****